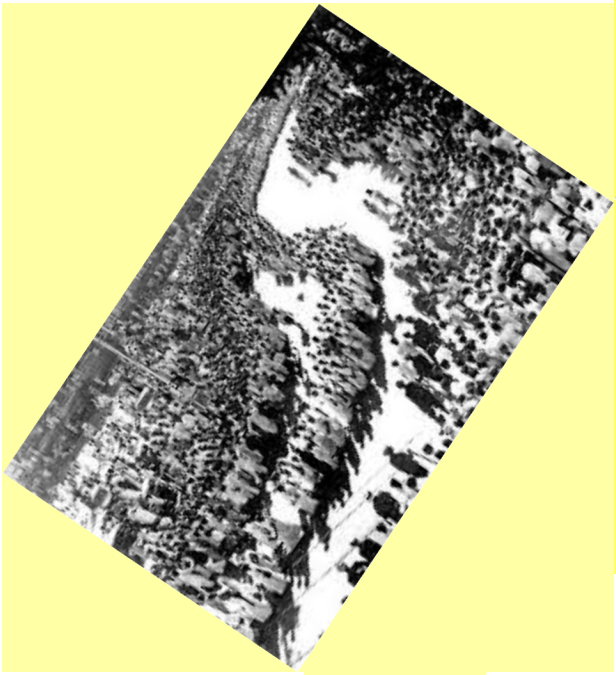

आज़ादी

जी एच एस एस एषिक्करा

(LK/ 2018/ 25103)

प्रस्तुति

स्वतंत्रता आँदोलन की

ऐतिहातिक घटनाएँ

संदेश

मानव के सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति उनका जीवन है। इसे त्यागकर जो भारत के स्वतंत्रता केलिए लड़े, उन सबको हमारा प्रणाम। उनके सपने और चिंताएं एक थे, इसप्रकार भारत की आज़ादी साकार हो गई। हम इस महत्वपूर्ण आज़ादी का दुरुपयोग न करें। हम सब प्यार, भाईचारा आदी पर आधारित एकता के साथ जिएं।

प्रसाद के

प्रधानाध्यापक

संपादकीय

भारत को आजाद हुए 72 साल हो चुके हे ।हमें ये जानना चाहिए कि ऍसे कौन से महतवपूणा धटनाएं हँ जो भारत को आएदी की और बढ़ाया।इन धटनाओं के पहले 1757 के प्लासी युद्ध के बाद ब्रिटीश भारत मेँ राजानैतिक सत्ता जीत गए और 200 साल तक राज किया ।आइए देखेँ कि हम किन - किन घटनाओं से गुज़रकर आज़ादी प्राप्त की।

आर्या पी आर

संपादक

अनुक्रमणिका

1857 का विद्रोह. 7

बंगाल का विभाजन. 9

जालियाँवालाबाग हत्याकांड (1919) 10

असहयोग आंदोलन. 11

चौरी चौरा कांड 1922. 12

खिलाफत आंदोलन. 13

दिल्ली विधान सभा में बमविस्फोट. . 14

नमक सत्याग्रह. 17

भारत छोडो आंदोलन. 18

1857 का विद्रोह

1857 का विद्रोह मेरठ में सैन्य कर्मियों के विरोध से शुरु हुआ था। यह तेज़ी से कई राज्यों में फैल गया। पहली बार ब्रिटिश शासन को सेना की ओर से गंभीर चुनौती मिली, हालाँकि ब्रिटिश सरकार इसे एक वर्ष के अंदर दबाने में सफल रही। यह निश्चित रूप से एक ऐसी लोकप्रिय क्राँति थी, जिसमें भारतीय शासक, जनसमूह, किसान और नागरिक सेना शामिल थी। लोगों ने इसमें उत्साह से भाग लिया। इस विद्रोह को भारतीय इतिहासकारों ने भारतीय स्वतंत्रता का पहला संग्राम और यह ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ पहला संगठित आंदोलन कहलाया।

- अखिना ए आर

बंगाल का विभाजन

मुस्लिम और हिंदू यहाँ भाइयों की तरह रहते थे। उनकी एकता ब्रिटिशों के लिए मुख्य खतरा थी। दूसरा प्रशासनिक कारण था.

बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषणा 19 जुलाई 1905 को भारत के तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड कर्ज़न द्वारा की गयी थी। विभाजन 16 अक्टूबर 1905 से लागू हुआ था। विभाजन के कारण उत्पन्न उच्च स्तरीय राजनीतिक अशांति के कारण 1911 में दोनो तरफ की भारतीय जनता के दबाव की वजह से बंगाल के पूर्वी एवं पश्चिमी हिस्से पुनः एक हो गए ।

- मिथुन पी आर

जालियाँवालाबाग हत्याकांड (1919)

जालियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के पंजाब प्रांत के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के निकट जालियाँवाला बाग में हुआ। 1919 अप्रैल तेरह में लोग अमृतसर में जालियावालाबाग में रौलक्ट ऐक्ट का विरोध करने के लिए एक सभा हो रही थी जिसमें जनरल डायर नामक एक अँग्रेज ऑफिसर ने अकारण उस सभा में उपस्थित भीड़ पर गोलियाँ चलवा दीं जिसमें 400 से अधिक व्यक्ति मरे। जब उन्हें भागने की कोई जगह नहीं मिली, तो वो बाग में मौजूद कुएं में कूदना शुरू कर देते हैं, कुछ ही देर में कुआं खून और बच्चों, महिलाओं, बूढ़ों की लाशों से भर गया। जो शहीद कुआँ के नाम से जाना जाता है।

- विन्सी विनु

" शहीद कुआँ "

असहयोग आंदोलन

1920 में असहयोग आदोलन शुरु हुआ ।गाँधिजी ने असहयोग, अहिंसा आदि को अंग्रज़ों के खिलाफ शस्त्र के रूप में अपयोग किया । पहनने के लिए सूत कातने में समय बिताने केलिए कहा ।

गाँधिजि ने ब्रिटन की शैक्षिक संस्थाओ तथा अदालतों का बहिष्कार और सरकारी नौकरियों को छोड़ने का अनुरोध किया । असहयोग को दूर दूर से स्वीकृति और सफलता मिली ।समाज के सभी वर्ग के लोगों में जोश और भागीदारी बढ़ गई ।

- अनु आन्टणि

चौरी चौरा कांड 1922

चौरी चौरा घटना, 1922 को ब्रिटिश भारत के गोरखपुर जिले में हुई , इसी दिन चौरी चौरा थाने के दारोगा गुप्तेश्वर सिंह ने आजादी की लड़ाई लड़ रहे वालंटियरों की खुलेआम पिटाई शुरू कर दी। इसके बाद सत्याग्रहियों की भीड़ पुलिसवालों पर हमला की। जवाबी कार्यवाही में पुलिस ने गोलियाँ चलाई। जिसमें लगभग 260 व्यक्तियों की मौत हो गई। पुलिस की गोलियां तब रुकीं जब उनके सभी कारतूस समाप्त हो गए। इसके बाद सत्याग्रहियों ने थाने में बंद 23 पुलिसवालों को जिंदा जला दिया। इस घटना के बाद महात्मा गाँधी ने ' असहयोग आंदोलन' वापस ले लिया था।

- अखिनेष राज

खिलाफत आंदोलन

अंग्रेज़ी हुकूमत की जंजीरों को तोडने की भारत की कोशिशों में खिलाफत आँदोलन महत्व पूर्ण आँदोलनों में एक था। भारत में खिलाफत आँदोलन 1915 से 1924 तक चला। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेज़ की देखरेख में हिंदुओं और मुसलमानों ने एकजुट होकर ब्रिटीश राज का विरोध किया। जब महात्मा गाँधि ने उपनिवेशवाद के खिलाफ असहयोग आँदोलन को खिलाफत आंदोलन के साथ जोड दिया तब हिंदू मुस्लिम एक होकर उपनिवेशवादियों के खिलाफ मज़बूती से खडे हो गए।

- वैष्णवी सुरेश

दिल्ली विधान सभा में बमविस्फोट

निरंकुश और भेदभाव पूर्ण शासन के खिलाफ मानवता, भाईचारा, आपसी प्रेम और सर्वहारा का शासन स्थापित करने के मकसद से 8 अप्रैल 1929 में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केन्द्रीय असेंबली में बम फेंका था। बम फेंकने की बाद उन्होंने गिरफ्तारी दी। बाद में उनके खिलाफ मुकदमा चला 6 जून 1929 को दिल्ली के सेशन जज लियोनॉड मिडिल्टन की अदालत में अन्हें दोषी करार दिया गया।

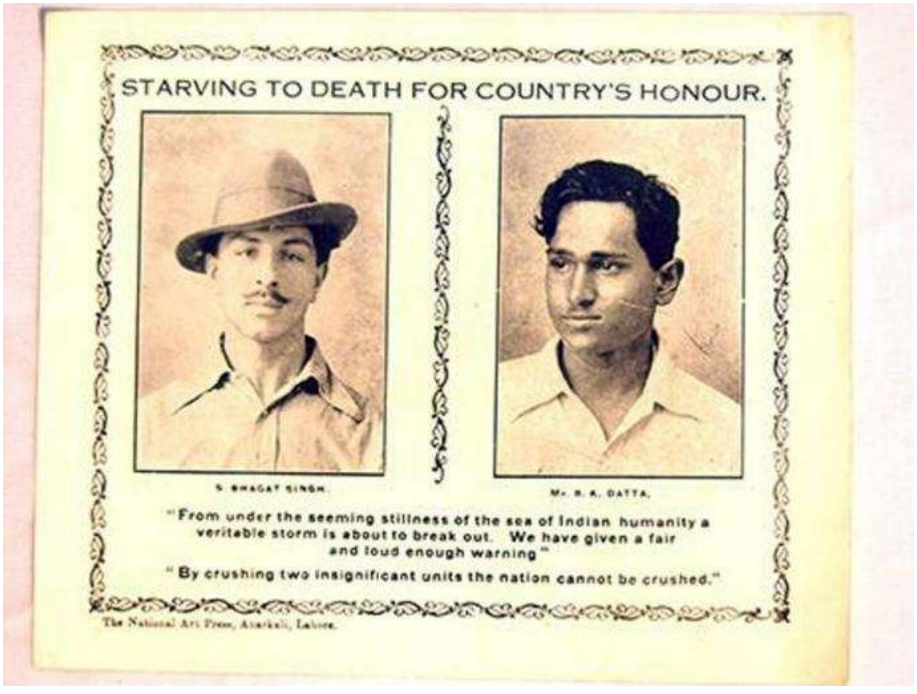

सविष्मा एन एस

नमक सत्याग्रह

1930 मार्च बारह को गाँधीजी के नेतृत्व में चली दणडी यात्रा शुरु की थी। इस दाण्डी यात्रा नमक सत्याग्रह के नाम से विख्यात है। यह यात्रा अहमदाबाद के सबरमति आश्रम से दणडी समुद्र तट की ओर थी । यह ब्रिटिश सरकार के नमक पर कर लगाने के कानून के विरुद्ध किया गया सविनय कानून भंग कार्यक्रम था, तब गाँधिजी ने सागर से जल लेकर नमक बनाया। इसपर गाँधीजी के साथ अनेक अनुयायी भाग लिये।

निसरी. पि. एस.

गुजरात के गांव दांडी में 'नमक सत्याग्रह स्मारक' तैयार किया गया है।
ये स्मारक 15 एकड़ भूमि पर बनाया गया है।

नमक सत्याग्रह

भारत छोडो आंदोलन

गाँधीजी के अह्वान से भारत को तुरंत आज़ाद करने केलिए अंग्रेज़ी शासन के विरुध्द एक सविनय अवज्ञा का आंदोलन था भारत छोड़ो आंदोलन। 8 अगस्त 1942 की शाम को बंबई में अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के बंबई सत्र में इसकों ' अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नाम दिया गया था। हालांकि गाँधी जी को फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया गया था लेकिन देश भर के युवा कायकर्ताओं ने हडतालों तथा तोड़फ़ोड़ की कारवाइयाँ शुरू की।

आदित्या . टी. पी.

आज़ाद हिंद फौज

सुभाषचन्द्र बोस के नेतत्व में 21 अक्तूबर ,1943 को आज़ाद हिंद सरकार का गठन हुआ था। सुभाष चन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फौज के कमाण्डर के हैसियत से भारत की अस्थाई सरकार बनाई। बहुत जल्द इसे जर्मनी, जापान,फिलिपींस, कोरिया, चीन, इटली और अयरलैंड ने मान्यता दी। उनका मानना था कि अंग्रेज़ों के मज़बूत शासन को केवल सशस्त्र विद्रोह की ज़रिए ही चुनौती दी जा सकती है।

अक्षया ई एम

धन्यवाद